प्रिय साथियों,

पिछले कई सालों से *जागोरी* नियमित रूप से जेन्डर कार्यशालाओं का आयोजन करती आ रही है। इन कार्यशालाओं में देश की विभिन्न महिला संस्थाओं, गैर सरकारी, समुदाय आधारित व शिक्षण संस्थान अपनी भागीदारी निभाते आये हैं और अपने अनुभव व विचारों से कार्यशाला को समृद्ध बनाया है।

कार्यशाला का संदर्भ

पिछले कुछ अर्सों में विश्व के मानचित्र पर आर्थिक विकास के दरों के सूचक में भारत की तेजी से आर्थिक स्थितियॉ मजबूत हुई हैं, और खासतौर से पिछले दस सालों में यह दर 8.8 प्रतिशत हो गई है। परन्तु इसके मानव विकास का सूचकांक एक भिन्न कहानी ही बयान करता है। गरीबी, महिला हिंसा और हाशियों पर जीने वाले समुदाय तक विकास पहुॅच ही नहीं पा रहा। हंलाकि विकास के सूचकांक दावा करते हैं कि महिलाओं को पहले के मुकाबले ज्यादा कानूनी अधिकार मिले हैं परन्तु अभी भी बहुत सी कमियॉ है जिसके कारणवश महिलायें वास्तिक व पूर्णरूप से सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक रूप से अपने को सशक्त नही कर पा रही हैं।

नव उदारवादी आर्थिक नीतियों के प्ररिप्रेच्छ देखें तो पायेंगे कि इन नीतियों ने गरीब समुदाय पर नकारात्मक असर डाला है। और महिलाओं को हाशिये पर लाने में तो अह्म भूमिका निभाई है। इन्हीं नीतियों के परिणामस्वरूप सरकारी नीतियों व बजट का मुख्य हिस्सा, बांध व सड़कें बनाने में, सेज जैसी नीतियों की वज़ह से खेती की ज़मीन को बहुराष्ट्रीय कंपनियों के हाथों में बेच डालने की प्रक्रिया में, निवेश होता है। इसका सीधा सीधा असर पड़ा है हाशिये पर जीने वाला गरीब तबके पर जो अपनी ज़मीन, घर और प्राकृतिक सम्पदा से वंचित होते जा रहे हैं। अर्न्तराज्जीय व अर्न्तदेशिय सीमा पर होने वाले पलायन में बढ़ोतरी आई है क्योंकि ग्रामीण इलाकों में लोगों के पास जीवनयापन के साधन कमतर या नही ंके बराबर हो गए हैं। आर्थिक सुधार नीतियों और औरतों में बढ़ती गरीबी का रिश्ता स्थापित हो चुका है।

हॅलाकि खेतीहर और अन्य मजदूरों का मौसमी पलायन आजीविका का मुख्य साधन वर्षों से भारतीय परम्परा का अंश रहा है किन्तु दिनों दिन घटती खेती, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन व खेती से कारखानों व मशीनी उद्योगों की तरफ उन्मुख होने की प्रवृत्ति ने मजदूर व गरीब तबके के लोगों के आय के साधनों का विकल्प क्षीण कर दिया है। और ऐसी संकट की परिस्थियों में परिवार चलाने की मुख्य जिम्मेदारी महिलाओं पर ही आन पड़ती है। महिलाये न केवल इसतरह की आर्थिक संकट का शिकार होती है बल्कि सामाजाकि व सांस्कृतिक हिंसा जो दलित, आदिवासी व अल्पसंख्यक होनी की वज़ह से वह भी झेलती हैं।

दूसरी ओर सामाजिक असुरक्षा का महिला हिंसा के साथ गहरा जुड़ाव देखने को मिलता है। घर और बाहर दोनों जगह ही महिला हिंसा दिनोदिन बढ़ रही है। घटता लिंग अनुपात पूरे भारत के लिए विकराल समस्या के रूप में उभर रहा है जिसमें पितृसत्ता जैसी मानसिकताओं के आलावा मेडिकल टेक्नॉलजी में बढ़ती मुनाफाखोरी जैसी सोच का भी गहरा योगदान है। महिलाओं के खिलाफ़ बढ़ती घेरलू हिंसा आज के दौर में महिला के मरने का मुख्य कारण के रूप में उभर कर सामने आ रही हैं। जल्दी शादी और दहेज की बढ़ती मांग उपभोगतावाद के घिनौने स्वरूप की तरह बढ़ रहा है। यौनिक उत्पीड़न व बलात्कार जैसी घटनाओं में तेजी महिला असुरक्षा को दिनों दिन बढ़ा रहे हैं। आज विश्वीकरण के परिवेश में महिला और पुरूषों की छवियॉ बदल रही हैं। इसी बदलाव के सिलसिले में महिलाओं के खिलाफ बढ़ती हिंसा के कारण का जुड़ाव कुंठित मर्दानगी भी है जो औरतों की बदलती और सशक्त होती तस्वीर से जुड़ी है। शिक्षा और समाज के अन्य क्षेत्रों में जिस तरह से महिलाओं के काबिलियत के प्रदर्शन हो रहे हैं उससे पितृसत्ता के मूल्यों पर करारी

चोट पहुँच रही है। विकास के सभी मापदंडों ने अब यह माना है कि जेंडर आधारित भेद–भाव और गैरबराबरी औरतों के सशक्तिकरण और देश के विकास में सबसे बड़ी रूकावट है।

इसी संदर्भ में नव उदारवादी आर्थिक नीतियों और उनका हाशिए पर जीवित गरीब समुदाओं पर क्या असर है, गरीबी की राजनीति क्या है, क्यों विश्वीकरण की प्रक्रिया एक तबके को आर्थिक व सामाजिक रूप से कमजोर कर रही है, आर्थिक विषमताओं का महिला हिंसा से क्या जुड़ाव है आदि पर समझ बनाने के लिए ही जागोरी ने इस बार के **'जेंडर व विकास'** कोर्स की अवधारणा तैयार की है। जिसके दौरान सत्ता के विभिन्न ढांचों को नारीवादी नज़रिए से देखने व परखने की हमारी कोशिश रहेगी।

साथ ही इस कोर्स से प्रयास रहेगा कि सीखने सीखाने का एक ऐसा मंच तैयार किया जा सके जहाँ जेन्डर व नारीवाद जैसी अवधारणाओं पर अपनी समझ बनाने के साथ ही ऐसी रणनीतियाँ भी तैयार हों जो इन अवधारणाओं की व्यवहारिकता को सार्थक कर सकें। **15 से 20 फरवरी 2010** को एक बार फिर 'जेन्डर व विकास' पर कार्यशाला दिल्ली में आयोजन किया जा रहा है और हम उम्मीद करते हैं कि आपकी सहभागिता इस प्रक्रिया को सफल बनायेगी।

उद्देश्य

- जेन्डर व नारीवाद की अवधारणाओं पर समझ बनाना।
- सत्ता आधारित समाज में व्याप्त गैरबराबरी व उससे कुछ तबकों के सीमान्तीकरण की राजनीति को नारीवादी नज़रिए समझना।
- मौजूदा विकास के मॉडल को जेन्डर संवेदनशील नज़रिए से विश्लेषण करना और विकल्प की रणनीति बनाना।
- कार्यकर्ताओं के बीच मज़बूत नेटवर्किंग स्थापित करना।

प्रशिक्षण किसके लिए

- यह प्रशिक्षण उन मध्य स्तरीय कार्यकर्ताओं की क्षमता विकास के लिए है जो समुदायिक स्तर पर कार्यरत हैं।
- समुदाय के साथ कम से कम 3–4 वर्षों के काम का अनुभव हो।
- मानव संसाधन व क्षमता विकास कार्यक्रम से जुड़े हों।

प्रतिभागियों के रहने खाने की व्यवस्था जागोरी की ओर से है। प्रतिभागियों को अपनी यात्रा व्यय की ज़िम्मेदारी खुद लेनी होगी।

रजिस्ट्रेशन फीस : **1500/– प्रति प्रतिभागी**

हमारा यह प्रयास आपके सहयोग के बगैर पूरा नहीं हो सकता इसलिए आप सभी से निवेदन है कि **अपनी सहमति व संलग्न नीड असेसमेंट फार्म भरकर हमें 10 जनवरी तक अवश्य भेज दें।**

आपका सहमति पत्र मिलते ही हम आपको कार्यशाला स्थल की जानकारी व प्रशिक्षण संबन्धि अन्य जानकारी जल्दी से जल्दी भेज देंगे।

शुभकामनाओं सहित,

अनुप्रिया और सुनिला सिंह
जागोरी